ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 5 | May 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i5.56

ग्रामीण विकास व सामाजिक परिवर्तन में संचार प्रौद्योगिकी

डॉ० प्रमोद कुमार सिंह[1], एकता सिंह[2]

[1]शोध निर्देशक, एसो० प्रोफेसर–समाजशास्त्र, के.एन.आई.पी.एस.एस. सुलतानपुर

[2]शोधार्थिनी–समाजशास्त्र, डॉ.रा.म.लो. अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र.

[2]**Email:** ektasingh.dev@gmail.com

सारांशः

सामाजिक शक्तियों के द्वारा ही संस्कृति का निर्माण होता है। ये शक्तियाँ ही प्रविधियों और मूल्यों के प्रसार का माध्यम बनकर कार्य का सम्पादन करती हैं। इसके ही अन्योन्य–क्रिया द्वारा ही परिवर्तन की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। अलग–अलग व्यक्तियों और व्यक्ति–समूहों के विचारों और क्रियाओं के योग से संस्कृति का गठन होता है। सामाजिक समूहों में, अभिरुचियों का निरन्तर अन्तर्द्वन्द्व चलता रहता है जिसके द्वारा भी परिवर्तन की प्रक्रिया संचालित होती रहती है। संस्कृति में परिवर्तन होने पर नयी आवश्यकताओं का जन्म होता है। अनुसारतः उनकी पूर्ति के लिए ही अनेक प्रयत्न की आवश्यकता होती है। सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य भी क्रमशः बदलते हैं। सामाजिक–संस्कृति परिवर्तन के साथ–साथ शैक्षिक परिवर्तन भी होते हैं। प्रायः यह सामाजिक परिवर्तन के पश्चात् की प्रक्रिया होती है। शैक्षिक परिवर्तन में आधुनिक संचार माध्यमों, विज्ञान और प्रौद्योगिकी साधनों की भूमिका निःसन्देह सिद्ध है।

शब्द संकेतः *ग्रामीण समाज, सामाजिक परिवर्तन, विज्ञान–प्रौद्योगिकी और उसके साधन, इलेक्ट्रानिक माध्यम, वैयक्तिक और वैकल्पिक माध्यम, सरकार द्वार चलायी जा रही कृषि प्रौद्योगिकी योजनाएँ, निष्कर्ष*

शोध पत्र के उद्देष्य

1. इस शोध पत्र द्वारा ग्रामीण समाज और उसके विकास पर प्रकाश डालना है।
2. सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को समझना है।
3. विज्ञान, प्रौद्योगिकी के साधनों को समझना है।
4. सूचना प्रौद्योगिकी के इलेक्ट्रॉनिक, वैयक्तिक और वैकल्पिक साधनों की चर्चा करनी है।
5. सामाजिक परिवर्तनों में मीडिया की भूमिका बताना है।
6. ग्रामीण समाज के विकास हेतु सरकारी योजनाओं पर प्रकाश डालना है।

सामाजिक परिवर्तन

वातावरण के साथ संतुलन स्थापित करने के लिए मानव अपनी आदतों, कार्य पद्धतियों, रुचियों, विचारों और लक्ष्यों–प्रयोजनों में परितर्वन व हेर–फेर करता है। इस भांति समाज में परितर्वन आता रहता है। यह परिवर्तन भौतिक और सामाजिक दोनों रूपों में प्रकट होता है, जिसे प्रकारान्तर से सांस्कृतिक परिवर्तन समझा जा सकता है। यह आवश्यक प्रक्रिया है। स्पेन्सर ने लिखा भी है–''सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक विकास है।'' रुहेला महोदय भी सामाजिक परिवर्तन को, सामाजिक प्रक्रिया, संरचना, उसके स्वरूप के किसी पक्ष में होने वाला परिवर्तन या रूपान्तरण माना है।''

इस प्रकार, हैरी जॉनसन ने सामाजिक परिवर्तन की परिसीमा में पाँच प्रकार के परिवर्तन बताया है –

1. सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन होना।
2. संस्थागत परिवर्तन होना।
3. स्वामित्व तथा पुरस्कारों के वितरण में परिवर्तन का होना।
4. कर्मचारीगण में परिवर्तन, तथा
5. कर्मचारीगणों की योग्यताओं में परिवर्तन का होना।

ग्रामीण विकास

गाँवों का देश, भारत में आधी से ज्यादा आबादी गाँवों में रहती है। सामान्यतः गाँवों के विकास के रूप में ग्रामीण विकास को माना जाता है, जिसका लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि से होता है। ग्रामीण विकास का अभिप्राय उसके सम्पूर्ण स्वरूप में, ग्रामीण क्षेत्रों के व्यापक विकास से है।[1] पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी भी मानते थे कि गाँव में शहरी सुविधाएँ जुटाना ग्रामीण विकास की कुंजी है। इससे शहरों पर बढ़ते बोझ को कम किया जा सकता है तथा ग्रामीण और शहरी विकास में पैदा हो रहे असंतुलन को भी दूर किया जा सकता है। शहरी सुविधाओं के अन्तर्गत पक्की सड़कें, पेयजल, बिजली सविधाएँ, विद्यालय, स्वास्थ्य सुविधाएँ और डाक–बैंकिंग प्रणाली शामिल है। इन सुविधाओं के अतिरिक्त नवीन प्रणाली के अन्तर्गत सूचना प्रौद्योगिकी को शामिल किया गया है जिससे अन्य सुविधाएँ सुगमतापूर्वक जुटाई जा सकती है।

विज्ञान–प्रौद्योगिकी और उसके साधन

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी ने यातायात, औद्योगीकरण सहित सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये हैं। गाँवों में, कृषि में भी प्रौद्योगिकी यन्त्रों का प्रयोग होने लगा है। इससे किसानों के जीवन स्तर में सुधार हो रहा है। प्रौद्योगिकी आविष्कारों की कोटि में रेडियो, टेलीविजन, रेफ्रीजरेटर, कार, वायुयान, कम्प्यूटर, एक्सरे, घरेलू इलेक्ट्रानिक सामान आदि ने हमारे सोचने और कार्य करने के ढंग को परिवर्तित कर दिया है। इसने हमारी कार्य प्रणाली और नैतिकता को, सामाजिक सम्बन्धों को भी बदल दिया है।

ग्रामीणों की और भारत की कृषि, अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसलिए केन्द्र सरकार की सहायता से विभिन्न राज्य सरकारों ने ई–कृषि की तरफ ध्यान दिया जिससे किसानों की स्थिति में सुधार हुआ। रहन–सहन के स्तर में सुधार होने से उनके जीवन स्तर में भी परिवर्तन और सुधार हुआ। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किसान अपने विभिन्न कृषि कार्यों में कर रहे हैं। कम्प्यूटर नियन्त्रित मशीनों का भी प्रयोग कृषि कार्यों में हो रहा है। खेती के समस्त कार्यों एवं सब्जियों, फूलों, फलों की पॉलीहाउस के अन्दर संरक्षित खेती में भी सूचना प्रौद्योगिकी योगदान दे रही है। संरक्षित खेती में फसलों को पानी, खाद और नमी की मात्रा और समय का निर्धारण भी कम्प्यूटर तकनीकी द्वारा हो रहा है जिससे ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन हो रहा है।

इलेक्ट्रानिक माध्यम

इसके अन्तर्गत सबसे सशक्त माध्यम टेलीविजन और रेडियो है। दृश्य–श्रव्य उपकरण होने के कारण यह किसानों के लिए बहुत लाभकारी, प्रभावशाली साधन है। इसमें विभिन्न, कृषि कार्यक्रम, ज्ञानदर्शन, ज्ञानवाणी, ऑडियो, वीडियो, सीडी, कैसेट, टेप आदि माध्यमों से किसानों को प्रशिक्षित किया जाता है।

वैयक्तिक माध्यम

ऐसे माध्यम, जो हमारे घर, कार्यस्थल व सार्वजनिक रूप से भी सुलभ हो सकते है, वैयक्तिक साधन हैं। जैसे मोबाइल, एस0एम0एस0, एम0एम0एस0, इन्टरनेट, ई–मेल, अन्य वैयक्तिक साधनों का प्रयोग करके किसान डाक–बैंकिंग की सहायता लेकर कृषि आदि कार्य को सुगमता से कर रहा है। पैसे का लेन–देन, बच्चों की सुरक्षा, देखभाल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हो सकती है। यह शिक्षा–प्राप्ति का भी सशक्त साधन है।

वैकल्पिक साधन

न्यूमीडिया, सोशल साइट्स और सॉफ्टवेयर और जिलियन जैसे विभिन्न सॉफ्टवेयरों के माध्यम से सीधे किसानों से जुड़ा जा सकता है। इससे कृषि सम्बन्धी जानकारी लोड की जा सकती है। यह भी ऑनलाइन, नेटवर्क पर उपलब्ध है।

मीडिया का प्रयोग

जिस तरह समाज में मीडिया की भूमिका निरन्तर बढ़ रही है, उसी प्रकार वह कृषि शिक्षा में भी सम्पूर्णता के साथ अपनाया जाय तो यह अधिक उपयोगी हो सकता है। एक ही समय में विभिन्न जानकारियाँ ली जा सकती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मीडिया अब ग्रामीणों की जरूरत बन गयी है। इससे ग्रामीणजन अपने ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं, जो लोग कहीं दूर नहीं जा सकते, समय की कमी है, वे लोग अपने पेशेगत कुशलता और दक्षता के लिए ज्ञानार्जन कर सकते हैं।

सरकार द्वारा चलायी जा रही कृषि प्रौद्योगिकी योजनाएँ :– ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने व किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य दिलवाने की दिशा में सरकार ने कई महत्वपूर्ण योजनाओं, कार्यक्रमों व प्रौद्योगिकियों आदि की शुरुआत की है, जिनका संक्षिप्त विवरण अधोलिखित है –

1. **आई0सी0टी0 तकनीक –** कृषि में उत्पादन बढ़ाने के लिए सूचना एवं संचार आधारित तकनीकी (आईसीटी) का प्रयोग कृषि विज्ञान के मोबाइल ऐप के द्वारा कृषि विस्तार कार्यकलापों में किया जा सकता है। आई0सी0टी0 के महत्व को समझते हुए किसानों तक नवीनतम कृषि संबंधी वैज्ञानिक जानकारियों के प्रसार हेतु, कई पहल की गई है। कृषकों के लिए वेब–आधारित कृषि विज्ञान के पोर्टल और कृषि विश्वविद्यालय पोर्टल को विकसित किया गया है। किसानों को त्वरित व सुलभ सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के लिए मोबाइल ऐप भी बनाया गया है। जैसे किसान पोर्टल, किसान सुविधा, पूसा कृषि, फसल बीमा पोर्टल, एग्री मार्केट ऐप किसान पोर्टल, कृषि मंडी मोबाइल ऐप भी शुरू किए गए हैं।
2. **ई–खेती** – ग्रामीण विकास व कृषि से जुड़ी किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए इंटरनेट सबसे प्रभावी व सरल व माध्यम है। ई–खेती ने, वैज्ञानिको ंने, प्रसार कार्यकर्ताओं और कृषि विशेषज्ञों पर ग्रामीणों की निर्भरता को बहुत ही कम कर दिया है। इंटरनेट के माध्यम से सारी सूचनाएं प्राप्त कर लेते हैं।
3. **पूषा कृषि मोबाईल ऐप –** माननीय प्रधानमंत्री के प्रयोगशाला से खेत (लैब टू लैंड) तक के सपने को साकार करने के लिए पूसा कृषि मोबाईल ऐप किसानों की सहायता के लिए शुरू किया गया है।
4. **एम किसान पोर्टल –** एम किसान पोर्टल कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा लाखों किसानों को परामर्श दिया जा रहा है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा 100 कृषि विज्ञान केन्द्रों पर स्वचालित मौसम केन्द्र जोड़े गए हैं।[2]
5. **राष्ट्रीय कृषि मंडी (ई नैम पोर्टल)** – राष्ट्रीय कृषि मण्डी ई–नैम पोर्टल की स्थापना किसानों के लिए एक क्रांतिकारी कदम है। इसके तहत ई–नैम में एक राष्ट्र एवं एक बाजार तथा किसानों की समृद्धि पर जोर दिया

गया है। इससे 14 अप्रैल 2016 को अम्बेडकर जयंती के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा राष्ट्रीय कृषि मण्डी, वेब आधारित आनलाईन व्यापार पोर्टल की शुरुआत की गई। इस पोर्टल के माध्यम से किसान अपनी उपज देश भर की मंडियों के माध्यम से बेच सकेंगे।

6. **ई–पशुधन–हारपोर्टल की स्थापना –** देश में पहली बार राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 26 नवम्बर 2016 को मनाया गया। इसके शुभ अवसर पर राष्ट्रीय उत्पादकता मिशन के अंतर्गत ई–पशुधन–हार पोर्टल की शुरुआत की गई है। यह पोर्टल देशी नस्लों के लिए प्रजनकों और किसानों को जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इससे किसान एवं प्रजनक देशी नस्ल की गाय–भैंसों को खरीद एवं बेच सकेंगे।[3]
7. **वाई–फाई चैनल –** वर्ष 2016–17 में वाई–फाई चौपाल परियोजनाएँ सीएससी के जरिए ग्रामीण भारत में वाई–फाई इंटरनेट सुविधाएँ प्रदान करने के लिए आरंभ की गई है। पहली वाई–फाई चौपाल 07 अप्रैल 2016 को हरियाणा के फरीदाबाद में घरोंडा गांव में खोली गई।
8. **डिजिटल साक्षरता अभियान** – प्रत्येक परिवार के कम से कम एक व्यक्ति को जिजिटल साक्षर बनाने के लक्ष्य की दिशा में डिजिटल साक्षरता अभियान में लोगों ने बहुत उत्साह से काम किया। एनडीएलएम दिशा कार्यक्रमों के क्रियान्वतम में सफलता के कारण सीएससी, एसपीवी को डिजिटल साक्षरता के लिए भारत सरकार द्वारा फरवरी 2017 में आरंभ किए गए नए महत्वाकांक्षी कार्यक्रम प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (पीएमजी दिशा) के क्रियान्वयन का जिम्मा भी वे दिय गया है।[4]

इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी के बुनियादी ढांचे के इस विस्तार के फलस्वरूप गांवों में ई–क्रांति आ गयी। गांवों के डाकघरों का भी कम्प्यूटरीकरण किया गया जिससे ये डाकघर बैंकों की तरह साफ–सुथरे वातावरण में तेजी से काम करने वाले केन्द्र बन गये। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग को लोकप्रिय बनाने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2001 को ई–प्रशासन वर्ष के रूप में मनाया। ई–प्रशासन के विस्तार के लिए विभिन्न राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक अभिनव योजनाएँ चलाई गई है, जिसमें से कुछ प्रमुख योजनाएँ इस प्रकार से है –

- ई–चौपाल (आठ राज्यों में मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, हरियाणा, महाराष्ट्र, उत्तराखण्ड व आंध्रप्रदेश)
- जागृति ई–सेवा – (वर्ष 2003, ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि प्रशासन, मात्रा संबंधी सुविधाएं वित्तीय प्रबंधन को सुलभ बनाती है।
- जनमित्र – (वर्ष 2002 राजस्थान एवं उत्तराखण्ड में भी ई–प्लेटफार्म समेकित सेवा की शुरुआत की गई)।
- ग्रामदूत – (राजस्थान 2002)।
- ज्ञानदूत – (मध्य प्रदेश 2000 ग्रामवासियों के लिए इंटरनेट आधारित पोर्टल खोला गया)।
- लोकवाणी – (उत्तर प्रदेश 2004)।
- लोकमित्र – (हिमाचल प्रदेश)।
- आकाशगंगा – (गुजरात)।

अनुप्रयोग / निष्कर्ष

सारतः, कहा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा ग्रामीण भारत में उत्पादकता को बढ़ावा दिया जा रहा है और स्थानीय लोगों के समाधान का आदान–प्रदान कर कृषि एवं बाजार आदि से जुड़ी महत्वपूर्ण और व्यवसायिक

सूचनाओं को सुलभ कराने जैसे अनेक कार्यों के जरिए संचार प्रौद्योगिकी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों का परिदृश्य बदलने का काम कर रही है। सरकार द्वारा संचालित अनेकों सेवाओं का ज्यादा से ज्यादा ग्रामीण लाभ उठाएं और ग्रामीण क्षेत्र में कृषि संबंधी कार्यों में तकनीक उपकरणों का अधिकतम प्रयोग करना चाहिए, तभी ये सेवाएं शुरु करने का लाभ होगा। इन्हीं सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों से ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन का सपना पूरा किया जा सकता है।

संदर्भ :

[1]. कुमार, वीरेन्द्र (2017); ई–तकनीकी का ग्रामीण विकास में योगदान, कुरुक्षेत्र सूचना प्रशासन मंत्रालय, नई दिल्ली, अंक 10, पृ0 41

[2]. कुमार, वीरेन्द्र (2017); ई–तकनीकी का ग्रामीण विकास में योगदान, कुरुक्षेत्र सूचना प्रशासन मंत्रालय, नई दिल्ली, अंक 10, पृ0 43

[3]. मित्तल संजीव (अगस्त 2017), कुरुक्षेत्र सूचना प्रशासन मंत्रालय, नई दिल्ली, अंक 10

[4]. सेतिया सुभाष (जनवरी 2012) : गांवों में सूचना प्रौद्योगिकी का बढ़ता प्रभाव, कुरुक्षेत्र ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, अंक–3

[5]. लाल, रमन विहारी; शिक्षक के सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

[6]. डॉ0 पाण्डेय, गौरीशंकर : सतत शिक्षा की रूपरेखा; ऊषा प्रकाशन मुजफ्फरा, अयोध्या।

Cite this Article

डॉ० प्रमोद कुमार सिंह, एकता सिंह, "ग्रामीण विकास व सामाजिक परिवर्तन में संचार प्रौद्योगिकी", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 5, pp. 32-36, May 2024.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i5.56*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.